Airo International Research Journal
Volume 23, ISSUE 1
ISSN: 2320-3714
October 2020

Multidisciplinary
Peer Reviewed Indexed Journal
Impact Factor: 5.68

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों का रोजगार सृजनमें योगदान

डॉ0 राजेशकुमार शर्मा
असि0 प्रोफेसर
वाणिज्य विभाग
किसान डिग्री कालेज, बहराइच, उ0 प्र0

शोध पत्र

आज भारत की गणना वि"व के 10 प्रमुख औद्योगिक दे"ाों में की जाती है।दे"ा को इस सम्मानजनक स्थिति में पहुँचाने के लिए बड़े उद्योगो के साथ–साथ सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों ने भी महत्वपूर्ण भूमिंका अदा की है। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास के इंजन रहे है।

जनसंख्या की दृष्टि से भारत को वि"व में दूसरा स्थान प्राप्त है, दे"ा में बढ़ती हुई बेरोजगारी को दूर करने में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगो का योगदान सराहनीय रहा है। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों के द्वारा दे"ा के कुल विनिर्माण क्षेत्र के उत्पादन में 40 फीसदी की भागीदारी है। इन उद्योगों के द्वारा 6 हजार से अधिक उत्पादों का निर्माण किया जा रहा है जिनमें परम्परागत वस्तुओं के साथ–साथ अति आधुनिक उत्पाद भी शामिल हैं।

वर्ष 2015–2016 के आँकलन के अनुसार भारत में लगभग 3.61 करोड़ पंजीकृत एवं गैर पंजीकृत सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों की इकाइयाँ कार्य"ाील हैं तथा इनके द्वारा 815 करोड़ लोगों को रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाये जा रहे है। ये उद्योग प्रायः श्रम बाहुल्य होते हैं जिन पर पूँजी की प्रति इकाई दर मिलने वाला रोजगार बहुत अधिक होता है। इन उद्योगों की रोजगार सृजन क्षमता बहुत अधिक होती है। इसलिए यह आव"यक है कि बड़े उद्योगों के साथ–साथ, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों के विकास पर भी ध्यान दिया जाय। एक अध्ययन में यह पाया गया है कि बड़े उद्योगों में एक व्यक्ति को रोजगार देने के लिए 5 लाख रूपये का निवे"ा जरूरी है जबकि सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों में इतने ही निवे"ा के द्वारा 7 लोगों को रोजगार दिया जा सकता है। इस

Airo International Research Journal
Volume 23, ISSUE 1
ISSN: 2320-3714
October 2020

Multidisciplinary
Peer Reviewed Indexed Journal
Impact Factor: 5.68

प्रकार यह स्पष्ट होता है कि सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम बड़े उद्यमों की तुलना में रोजगार सृजन में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम किसे कहते है :–

वर्ष 2006 से सूक्ष्म,लघु एवं मध्यम इन्टरप्राइज डेवलपमेन्ट अधिनियम पारित किया गया है जो कि 2 अक्टूबर 2006 से प्रभावी हुआ इस के अन्तर्गत इन उद्यमों की निम्न दो वर्गो में रखा गया है:–

1 विनिर्माण उद्यम :–

क : सूक्ष्म उद्यम :– प्लॉट तथा म"ाीनरी के लिए निवे"ा की सीमा रु 25 लाख से अधिक न हो।

ख : लघुउद्यम :– प्लॉट तथा म"ाीनरी के लिए निवे"ा की सीमा रु 25 लाख से अधिक किन्तु रु 5 करोड़ से कम हो।

गः मध्यम उद्यम :– प्लॉट तथा म"ाीनरी के लिए निवे"ा की सीमा रु 5 करोड़ से अधिक किन्तु रु 25 करोड़ से कम हो।

2 सेवा उद्यम :–

क : सूक्ष्म उद्यम – उपकरण के लिए निवे"ा की सीमा रु 10 लाख से अधिक न हो।

ख : लघु उद्यम :– उपकरण के लिए निवे"ा की सीमा रु 10 लाख से अधिक किन्तु रु दो करोड़ से कम हो।

ग : मध्यम उद्यम :– उपकरण के लिए निवे"ा की सीमा रु 2 करोड़ से अधिक किन्तु 5 करोड़ से अधिक नही होनीचाहिए।

दे"ा के आर्थिक और सामाजिक विकास में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है।इन उद्यमों के द्वारा दे"ा में व्याप्त बेरोजगारी, क्षेत्रीय असन्तुलन और सम्पत्ति के असमान वितरण जैसी समस्याओं का समाधान सफलता पूर्वक किया जा सकता है।

तालिका–1
सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों की प्रगति

वर्ष	कारखानों की संख्या (लाख में)	रोजगार (लाख में)
2000–01	101.10	239.09

Airo International Research Journal
Volume 23, ISSUE 1
ISSN: 2320-3714
October 2020

Multidisciplinary
Peer Reviewed Indexed Journal
Impact Factor: 5.68

01–02	105.21	249.33
02–03	109.49	260.21
03–04	113.95	271.42
04–05	118.59	282.57
05–06	123.42	294.91
06–07	361.76	805.23
07–08	377.36	842.06
08–09	393.70	880.44
09–10	410.80	921.79
10–11	428.73	965.15
11–12	447.66	1011.86
12–13	467.56	1061.52
13–14	488.46	1114.29
14–15	510.57	1171.32

स्रोत–वार्षिक रिपोर्ट 2015–16 सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय, भारतसरकार

तालिका सं0 1 से यह स्पष्ट होता है कि दे"ा में वित्तीय वर्ष 2000–01 में 101.10 लाख सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों की इकाइयाँ कार्यरत थी जिसमें 239.09 लाख लोगों को रोजगार प्राप्त था इसी प्रकार वित्तीय वर्ष 2006–07 में 361.76 लाख सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों की इकाइयाँ स्थापित थी जिसमें 805.23 लाख लोग कार्यरत थे। वित्तीय वर्ष 2014–15 में सूक्ष्म,लघु एवं उद्यमों की 510.57 लाख इकाइयाँ कार्यरत थी जिसमें 1171.32 लाख लोगों को रोजगार प्राप्त था।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि भारत में वित्तीय वर्ष 2000–01 से वित्तीय वर्ष 2014–15 तक सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों की संख्या में तथा इनमें रोजगार प्राप्त कर रहे लोगो की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। वास्तव में भारत में व्याप्त बेरोजगारी की गम्भीर समस्या के समाधन में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों का रोजगार सृजन में योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों के समक्ष चुनौतियाँ :–

इन उद्यमों के विकास मार्ग में आने वाली प्रमुख बाधाएँ निम्न प्रकार हैः–

1– निम्न कोटि का कच्चा माल उच्च लागत पर मिलना

2– गलत नियोजन

Airo International Research Journal
Volume 23, ISSUE 1
ISSN: 2320-3714
October 2020

Multidisciplinary
Peer Reviewed Indexed Journal
Impact Factor: 5.68

3– अकु"ाल प्रबन्धन

4– उत्पादन क्षमता का कम प्रयोग

5– वित्त की समस्या (कमजोर वित्तीय क्षमता)

6– पिछड़ी तकनीकी का प्रयोग

7– बड़े उद्योगों से प्रतिस्पर्द्धा

8– असन्तोष जनक वस्तु एवं सेवाकर अधिनियम 2017

9– विपणन की समस्या

10– अनियमित एवं आपर्याप्त विद्युत आपूर्ति।

11– कु"ाल श्रमिकों का अभाव

12– उत्पादन क्षमता का कम प्रयोग

सुझाव

1 ऋण की उपलब्धता :–

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगो को पर्याप्त एवं समय पर ऋण उपलब्ध हो सके सरकार को इस ओर–अधिक ध्यान देने की आव"कता हैं। वाणिज्यिक बैकों के द्वारा सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों का ऋण प्रदान करने में प्राथमिकता नही प्रदान की जा रही है।

2 कच्चमाल की उपलब्धता :–

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों को कच्चा माल के आवंटन में प्राथमिकता दिये जाने की आव"यकता है प्रायः यह देखा गया है कि बड़े उद्यमियों की तुलना में छोटे उद्यमियों को कच्चा माल प्राप्त करने में कठिनाई होती है।

3–औद्योगिक वस्तियों की स्थापना :–

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगो को बड़े उद्योगों से प्रतिस्पर्धा करनी पड़ रही है। इसलिए इन उद्योगो को बढ़ावा देने के लिए यह आव"यक है कि ऐसी औद्योगिक बस्तियों की स्थापना की जाय जहाँ पर सभी मूल–भूत सुविधाएँ उपलब्ध हो।

Airo International Research Journal
Volume 23, ISSUE 1
ISSN: 2320-3714
October 2020

Multidisciplinary
Peer Reviewed Indexed Journal
Impact Factor: 5.68

4–विपणन सहायता :–

विज्ञापन के आभाव में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों के उत्पाद प्रसिद्ध ब्राण्डो से प्रतियोगिता नही कर पाते है। जबकि इन उद्योगों में निर्मित उत्पादों में मौलिकता पायी जाती है। अतः जरूरत इस बात की है कि सरकार इन उद्योगों को विपणन में सहायता उपलब्ध करवाये।

5–तकनीकी सहायता :–

उन्नत तकनीक के अभाव में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगो का विकास प्रभावित हो रहा है। इसलिए आव"यकता इस बात की है कि इन उद्योगों में कार्यरत श्रमिको को नवीन तकनीक का प्र"िाक्षण दिया जाय जिससे ये उद्योग वै"िवक प्रतियोगिता का सामना करने में सक्षम हो सके।

निष्कर्ष :–

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों को दे"ा की अर्थव्यवस्था की नीव, प्रगति का आधार स्तम्भ एवं आर्थिक संरचना का प्रमुख घटक कहा जाता है। इन उद्यमों के द्वारा करोड़ों लोगों को रोजगार प्रदान किया जा रहा है तथा इनके द्वारा वर्तमान वै"िवक प्रतियोगिता का मजबूती से सामना किया जा रहा है। इसलिए इन उद्यमों को उनकी किस्मत पर नहीं छोड़ा जा सकता है क्योंकि ये बेरोजगारी एवं गरीबी दूर करने के प्रमुख अस्त्र हैं। सरकार द्वारा ऐसी नीतियाँ बनायी जाये जिस से इन उद्यमों की उत्पादकता एवं रोजगार सृजन क्षमता में वृद्धि हो। सरकारी क्रय में इन उद्यमों को मूलभूत सुविधाएँ प्राथिकता के आधार पर उपलब्ध करवायी जायें।

Airo International Research Journal
Volume 23, ISSUE 1
ISSN: 2320-3714
October 2020

Multidisciplinary
Peer Reviewed Indexed Journal
Impact Factor: 5.68

— : सन्दर्भ स्रोत :—

1—भारतीय अर्थव्यवस्था—मिश्रा एवंपुरी

2—भारतीय अर्थव्यवस्था विकास एवं सांख्यिकीय सर्वेक्षण— एस0एन0लाल

3—आर्थिक विकास एवं योजना— एम0एल0झीगंन

4—आर्थिक सर्वेक्षण, भारतसरकार

5— योजना

6- www.dcmsme.gov.in

7- www.smeeorld.org

8- www.msme.gov.in